नवग्रह चालसिा

श्री गणपति गुरुपद कमल, प्रेम सहति शरिनाया ।नवग्रह चालीसा कहत,शारद होत सहाय
जय जय रवि शशि सोम बुध,जय गुरु भ्रगु शनि राज
जयति राहू अरु केतु ग्रह, करहु अनुग्रह आजा

प्रथमही रवि कहिं नावौ माथा, करहु कृपा जन जानी अनाथा
हे आदतिय दविाकर भानु, मै मतमिन्द महा अग्यानु
अब नजि जन कहं हरहु कलेशा, दनिकर द्वादशा रूपा दनिेषा
नमो भास्कर सूर्य प्रभाकर, अर्क मति्र अघ मोघ क्षम्माकर
शशि मियंक रजनपिति स्विामी, चंद्र कलानधिनिमो नमामि
राकापति हिमिांशु राकेशा, प्रनवत जन तना हरहु कलेशा
सोम इंदु वधिु शान्ति सुधाकर, शीत रश्मि औषधि निशिाकर
तुम्ही शोभति सुंदर भाल महेशा, शरण शरण जन हरहु कलेशा
जय जय मंगल सुखा दाता, लौहति भौमादकिा वखि्याता
अंगारक कुंज रुज ऋणहारि, दया करहु यही वनिय हमारी
हे महसिुत छातसिुत सुखरासी,लोहतिांगा जय जन अघनासी
अगम अमंगल अब हर लीजे, सकल मनोरथ पूरन कीजै
जय शशि नंदन बुध महाराजा, करहु सकल जन कहाँ शुभ काजा
दीजै बुद्धि सुमति सुजाना, कठनि कष्ट हरी करी कलयिाना
हे तारासुत रोहणिी नंदन, चंद्र सुवन दुहख द्वंद नकिन्दन
पूजहु आस दास कहूँ स्वामी प्रणत पाल प्रभु नमो नमामि
जयति जियति जिय श्री गुरु देवा, करहु सदा तुम्हारी प्रभु सेवा।
देवाचार्य तुम गुरु ज्ञानी, इन्द्र पुरोहति वदि्या दानी
वाचस्पति बागीसा उदारा, जीव भ्रुहस्पति नाम तुम्हारा
वदि्या सनि्धु अंगीरा नामा, करहु सकल वधि पिूरण कामा
शुक्रदेव तल जल जाता, दास नरितर ध्यान लगाता
हे उशना भार्गव भृगुनंदन , दैत्य पुरोहति दुष्ट नकिन्दन
भ्रगुकुल भूषण दुसना हारी, हरहु नैष्ट ग्रह करहु सुखारी
तुही दवजिवर जोशी सरिताजा, नर शरीर के तुम्ही राजा
जय श्री शनि देव रवनिंदन , जय कृष्णो सौरी जगवन्दन
पगिल मन्द रौद्र यम नामा, वप्र आदि कोणस्थ ललामा
वक्र दृष्टी पपि्लन तन साजा, क्षण मह करता रंक क्षण राजा
ललत स्वर्ण पद करत नहिाला, हरहु वपिति छाया में लाला
जय जय राहू गगन प्रवसिैया, तुम्ही चंद्र आदतिय ग्रसईया
रवि शशि अरी सर्वभानु धारा, शखिी आदि बिहु नाम तुम्हारा
सैहंकिेय तुम नशिाचर राजा, अर्धकार्य जग राखहु लाजा
यदि ग्रिह समय पाय कहीं आवहु, सदा शान्ति और सुखा उपजवाहू
जय श्री केतु कठनि दुखहारी, करहु सृजन हति मंगलकारी
ध्वजयुक्त रुण्द रूप वकिराला, घोर रौद्रतन अधमन काला
शखिी तारकिा ग्रह बलवाना, महा प्रताप न तेज ठकिाना
वहन मनि महा शुभकारी, दीजै शान्ति दिया उर धारी
तीरथराज प्रयाग सुपासा, बसे राम के सुंदर दासा
ककरा ग्राम्हीं पूरे-तवािरी, दुर्वासाश्रम जन कष्ट उतरना सेतु
नवा-ग्रह शान्ति लिखि्यो सुखा हेतु, जन तन कष्ट उतारण सेतु
जो नति पाठ करै चति लावे, सब सुख भोगी परम पद पावे

धन्य नवग्रह नवग्रह देव प्रभु, महिमा अगम अपार
चीत नव मंगल मोद गृह, जगत जनन सुखद्वारा
यह चालीसा नावोग्रह वरिचति सुन्दरदास
पढ़त प्रेमयुक्त बढ़त सुख, सर्वानन्द हुलास